IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत के मशहूर गजल गायक – पंकज उधास

डॉ.विजया जगन्नाथ पिंजारी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, पाचवड
ता.वाई,जि.सातारा
मो.9881625879
मेल.आयडी-vijayapinjari@gmail.com

गायकी के क्षेत्र में अन्य क्षेत्र की तुलना में गजल इस विधा को लेकर काम करनेवालों की संख्या कम है। गजल के क्षेत्र में काम करनेवालों में कई मशहूर नाम है। उदा. दुष्यंत कुमार, शमशेर बहादुर सिंह, गुलजार साहब, अदम गोंडवी, अनूप जलोटा, गोपाल दास नीरज, विश्वनाथ, शेरगंज, त्रिलोचन सहित अन्य साहित्यकारों ने भी गजल पर काम किया है, लेकिन उसकी मात्रा बहुत कम है। इसमें एक नाम और भी शामिल है। गजल के क्षेत्र में काफी मशहूर है। जिन्होंने गजल गायकी के क्षेत्र में अपना अनोखा योगदान दिया है। इतना ही नहीं वह गजल गायकी के लिए काफी लोकप्रिय हो चुके हैं। वह है भारत के ग़ज़ल गायक पंकज उधास

व्यक्तित्व

पंकज उधास जी का जन्म 17 मे 1991 में हुआ। गुजरात राज्य में जेतपुर के करीब 'नवगढ़' गांव में उनका जन्म हुआ। तीन भाई में से पंकज उधास छोटे भाई थे। पिताजी का नाम केशुभाई और माताजी जीतूबेन थी। बड़े भाई का नाम मनहर था। वह आगे चलकर बॉलीवुड फिल्मों में पार्श्वगायन का काम करने लगे। छोटा भाई गजल गायक हुआ। पंकज उधास जी को बचपन से ही संगीत में विशेष रूचि थी।

गुजरात के करीब भावनगर में स्थित बी.पी.टी. विद्यालय से हाईस्कूल शिक्षा पंकज उधासजी ने प्राप्त की। आगे उनका परिवार मुंबई आकर स्थित हुआ। उन्होंने वहां सेंट जेवियर्स महाविद्यालय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उनके दादाजी राजकोट के करीब नवगढ़ गांव के जमींदार थे। दादाजी उस समय के ग्रेजुएट पड़े थे। पिताजी भी ग्रेजुएट थे। सरकारी नौकरी किया करते थे। पिताजी तंतु वाद्य अच्छा बजाय करते थे। उस समय के प्रसिद्ध वाद्य गायक अब्दुल करीम खाँ से उनके पिताजी ने शिक्षा ग्रहण की थी। उनके बेटे पंकज उधास की संगीत में रुचि देखकर उन्होंने भी उन्हें बचपन से ही संगीत शिक्षा की तालीम देना आरंभ किया। पंकज उधास जी का विवाह अंतरधर्मीय था। उनकी पत्नी का नाम फरीदा उधास था। दोनों के परिवारों में विवाह को अनुमति नहीं थी। यह प्रेम विवाह

था। कुछ समय बाद पंकज उधास ने दोनों परिवारों को मनवाया और उनका विवाह हुआ। उन्हें दो संतान थी। लड़की नायाब उधास, और रीवा उदास। पंकज उधास की शादी 70 के दशक में हुई। फरीदा व्यवसाय से एक एयर होस्टेस थी परधर्मीय थी। फिर भी विवाह के पश्चात दोनों की अच्छी बनी।

पंकज उधास जी के पिताजी दिलरुबा वादन सीखा करते थे। बचपन में वह उनके पिताजी की ओर देखा किया करते थे। आगे जाकर उनके पिताजी ने उन्हें बड़ा होने पर राजकोट संगीत अकादमी में संगीत की तालीम के लिए दाखिल कराया। संगीत के साथ वे तबला वादन भी सीख गए। गुलाम कादिर खान साहब से हिंदुस्तानी मुखर शास्त्रीय संगीत सीखना उन्होंने शुरू किया। उसके बाद ग्वालियर के रहनेवाले नवरंग नागपुर कर जो मुंबई स्थित थे। उनके पास उन्होंने संगीत की शिक्षा ली।

कहा जाता है की उम्र के 6 साल में ही पंकज उधास जी ने संगीत और गीत गाना आरंभ किया था। 11 साल की उम्र में उन्होंने भारत पाकिस्तान महायुद्ध के दरमियान एक मंचिय शो में 'ए मेरे वतन के लोगो'। यह गीत गया था। प्रेशकों द्वारा उनके गीत को काफी साराहा गया। उनके गीत की काफी प्रशंसा हुई और एक चाहने वाले ने उन्हें 51रूपिये इनाम के तौर पर दिये।

पहली बार उन्होंने 1972 में 'कामना' फिल्म में एक गीत गया। जीस के बोल थे 'तुम कभी सामने आ जाओगे'। आगे उन्होंने उर्दू सीखी और गजल गायक बने गजल गायिकी में पंकज उधास काफी मशहूर हुए। 'चिट्ठी आई है वतन से चिट्ठी आई है' और 'चांदी जैसा रंग है तेरा सोने जैसे बाल'। 'ना कजरे की धार ना मोतियों के हर'। जैसे प्रसिद्ध गीत उन्होने गए और वह आगे लोकप्रिय भी रहे।

*** पंकज उधासजी को संगीत की देन-**

1980 में उनका पहला एल्बम 'आहट' 1987 में 'शगुफ्ता' प्रसारीत हुआ आगे इसकी श्रृंखला चलती ही रही। मुकर्रर, तरन्नुम, नबील, नायाब, अमन, महफिल, रानुअत ,बैसाखी, गीतनुमा, याद, स्टालेन, मूवमेंट्स, कभी आंसू कभी खुशबू कभी ना धुआ।

हमनुशी, आरफीन, वो लड़की याद आती है। रुबाई ,महक, घुंघट, मुस्कान, इन सर्च आफ मीर, हसरत, भालोबाशा , एट लेस लव, यार- उस्ताद, अमजद अली खान का संगीत, शब्द- वैभव सक्सैना और गुंजन झा का संगीत। शायर आदि।

*** इन फिल्मी गीतों को पंकज उधास ने खुद गाया है -**

तुम हंसी में जावा ,नाम, तमाचा, एक ही मकसद, गुनाहों का फैसला, दयावान, गंगा जमुना सरस्वती, हम इंतजार करेंगे, गोला बारूद, लाल दुपट्टा मलमल का, गवाही, घायल, पाप की कमाई, थानेदार, बहार आने तक, साजन, विश्वकन्या, अधर्म, बीटा, संगीत, जिगर, आजा सनम, दिल आशना है, मेहरबान, इज्जत की रोटी, आदमी खिलौना है।, सनम तेरी कसम ।,एक ही रास्ता।, बाजीगर। मोहब्बतों का सफर। दिल अपना और प्रीत पराई। सलामी, मैं तेरा आशिक।, यह दिल्लगी। मोहरा, मैं खिलाड़ी तु अनाड़ी। जय विक्रांत, मिलन, मजदूर, कालिया, जीवन, युद्ध, स्पर्श, जंग, घाट, यह है जलवा। गजल ए मोहब्बत वॉल्यूम 1, मान गए मुग़ल-ए-आज़म।, सनम तेरी कसम। मालिक, एक शब्द। माता की भेंट। दिल तो दीवाना है। घायल, दिल्लगी, फिर तेरी कहानी याद । घर की इबादत। ऐसे ही कई सुपरहिट फिल्मों के

गीत पंकज उधास साहब ने गए और वह काफी लोकप्रिय हुए । आज भी लोग उनके गीतों को प्रेम से दोहराते हैं। याद करते हैं। हिंदी फिल्मों को दी हुई उनके संगीत और गीतों की देंन को हम पंकज उदास को भूलकर भी नहीं भूला सकते। चाह कर भी नहीं भूल सकते। उनकी आवाज संगीत और गीतों में होनेवाला लफ्जों का जज्बा, पंकज उधास को हमेशा याद रखेगा।

*** पंकज उधास एक कलाकार –**

पंकज उधास जो अपने जीवन में संगीत के शौकीन तो थे ही। साथ ही साथ संगीत की दुनिया के उपासक भी थे। वह खुद हारमोनियम, गिटार, पियानो, वायलिन, तबला आदि अच्छा बजा लेते थे। इसके साथ ही फिल्म संगीत के क्षेत्र से जुड़ी दो कंपनियों में उन्होंने बेहतर काम किया है। ई एमी आय कंपनी और दूसरी टी-सीरीज कंपनी जिन्होंने कैसेट की दुनिया में अपना नाम कमाया है । इन दो कंपनियों में पंकज उधास जी का काफी योगदान है।

*** पंकज उधास जी की कुछ दिलचस्प बातें –**

१) पंकज उधास समारोह आरंभ होने से पहले हमेशा हनुमान चालीसा पढ़ा करते थे।

२) वह अपने गीतों में कभी रीमिक्स पसंद नहीं करते थे। रीमिक्स के वे बिल्कुल खिलाफ थे। उन्होंने अपने गायी की में इसका कभी अनुकरण नहीं किया।

३) पंकज उधास जी ने बचपन से अपने मन में डॉक्टर होने की तमन्ना रखी थी। उनके माता-पिता जी भी यही चाहते थे लेकिन जैसे-जैसे वह बड़े हुए। उनका झुकाव संगीत क्षेत्र से विशेष रहा। उनकी ख्वाहिश और शोक देखते हुए। उन्होंने और उनके माता-पिता ने अपना रवैया बदला और डॉक्टरी के ख्वाब को छोड़कर उन्होंने संगीत क्षेत्र को अपनाया।

४) गायकी के अन्य प्रकारों में वह गजल को काफी पसंद करते थे। इसीलिए उन्होंने उर्दू सीखी ताकि वह गजल अच्छी तरह से प्रस्तुत कर सके।

५) २५ गजलों को उन्होंने शराब और मयखाने जैसे विषय को लेकर गाया, तो पंकज उधास जी के विरोधियों ने बाजार में उनका रवैया ही बदल दिया। बाजार ने उनके प्रति साजिश तैयार की और मीडिया में इस तरह की बातें फैला दी गई की पंकज उधास शराब और मयखाने से जुड़े हुए कलाकार है। या यू कहिए शराब और मयखाने से जुड़ी गजलें पंकज उधास जी गाते हैं।

*** पंकज उधास जी को प्राप्त पुरस्कार, सन्मान**

2006 - पंकज उधास को ग़ज़ल गायकी के करियर में सिल्वर जुबली पूरा करने के उपलक्ष्य में पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

2006 - "2005 के सर्वश्रेष्ठ गज़ल एल्बम" के रूप में "हसरत" को कोलकता में प्रतिष्ठित "कलाकार" एवार्ड से सम्मानित किया गया।

2004 - लंदन के वेम्बली कॉन्फरेंस सेंटर में इस प्रतिष्ठित स्थान पर प्रदर्शन के 20 साल पूरे करने के उपलक्ष्य में विशेष सम्मान।

2003 - 'इन सर्च ऑफ मीर' नामक सफल एल्बम के लिए एमटीवी इम्मीज एवार्ड दिया गया।

2003 - गज़ल को पूरे विश्व में लोकप्रिय बनाने के लिए न्यूयॉर्क के बॉलीवुड म्यूज़िक एवार्ड में स्पेशल अचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

2003 - गज़ल और संगीत उद्योग में योगदान के लिए दादाभाई नौरोजी इंटरनेशनल सोसायटी द्वारा 'दादाभाई नौरोजी मिलेनियम' एवार्ड से सम्मानित किया गया।

2002 - मुंबई में सहयोग फाउंडेशन द्वारा संगीत क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए पुरस्कृत किया गया।

2002 - इंडो-अमेरिकन चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा सम्मानित किया गया।

2001 - मुंबई शहर के रोटरी क्लब द्वारा एक गज़ल गायक के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वोकेशनल रिकग्नीशन अवार्ड दिया गया।

1999 - भारतीय संगीत में असाधारण सेवाओं के लिए, विशेष रूप से भारत और विदेशों में ग़ज़ल को बढ़ावा देने के लिए भारतीय विद्या भवन, अमेरिका पुरस्कार. न्यूयॉर्क में आयोजित गजल समारोह में प्रदान किया गया।

1998 - जर्सी सिटी के मेयर द्वारा इंडियन आर्ट्स एवार्ड्स गाला से सम्मानित किया गया।

1998 - अटलांटिक सिटी में अमेरिकन एकेडमी ऑफ आर्टिस्ट्स द्वारा आउटस्टैंडिंग आर्टिस्ट्स अचीवमेंट एवार्ड से सम्मानित किया गया।

1996 - संगीत क्षेत्र में बेहतरीन सेवा, उपलब्धि और योगदान के लिए इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी एवार्ड से सम्मानित किया गया।

1994 - संयुक्त राज्य अमेरिका के ल्यूबोक टेक्सास की मानद नागरिकता.

1994 - रेडियो के ऑफिशियल हिट परेड के कई मुख्य गानों की बेहतरीन सफलता के लिए रेडियो लोटस एवार्ड से सम्मानित किया गया। डर्बन यूनिवर्सिटि में रेडियो लोटस, साउथ अफ्रीका द्वारा प्रदान किया गया।

1993 - संगीत के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ मानकों को प्राप्त करने के लिए असाधारण प्रयासों को करने और इस प्रकार पूरे समुदाय को उत्कृष्टता प्राप्ति हेतु प्रोत्साहित करने के लिए जायंट्स इंटरनेशनल अवार्ड से सन्मानित किया।

1990 - सकारात्मक नेतृत्व और राष्ट्र के प्रति की गई बेहतरीन सेवा के लिए आउटस्टैंडिंग यंग पर्सन्स एवार्ड (1989-90) से सम्मानित किया गया। इंडियन जूनियर चैम्बर्स द्वारा प्रदान किया गया।

1985 - वर्ष का सर्वश्रेष्ठ गज़ल गायक होने के लिए के एल सहगल एवार्ड से सम्मानित किया गया।

***पंकज शब्द का अर्थ-**

पंकज का अर्थ है वह कमल का फूल जो कीचड़ में पैदा होता है फिर भी उसे कीचड़ की खुशबू नहीं आती। उसकी अपनी खुशबू कीचड़ के साथ रहते हुए भी किचड का असर नहीं डालती। अर्थात ऐसा व्यक्ति जो प्रतिकूल परिस्थिति में जन्म लेता है। फिर भी उसकी खुशबू कायम रहती है। पंकज उधास जी अपनी आवाज के कारण किसी कमल के फूल से कम नहीं थे। उनकी आवाज में फूलों से नाजुक नजाकत थी। खुशबू थी वह अपने आप में सचमुच कमल के फूल ही थे। इसीलिए शायद उन्हें पंकज कहा गया।

*** पंकज उधास जी के अंतिम दिन -**

जीवन के अंतिम दिनों में पंकज उधास जी एक असाधारण बीमारी से। लंबे समय तक मौत से जूझते रहे। अंत में उस बीमारी के सामने उन्हें हारना पड़ा और वह 26 फरवरी 2024 को सुबह 11:00 बजे, मुंबई के ब्रिज कैंडी अस्पताल में चल बसे। उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कहा। उन्हें पैंक्रिएटिक कैंसर हुआ था। इससे कई दिनों तक वह मुकाबला करते रहे लेकिन असफल हुए और उन्होंने यही से हमें अलविदा कहा। मरते वक्त उनकी उम्र 72 साल की थी। भले ही पंकज उधास जी आज हमारे बीच नहीं रहे। वैसे तो आनेवाला हर शख्स एक न एक दिन अपना मकान खाली कर दूसरी दुनिया में चला जाता है, लेकिन अपनी असाधारण गजल गाईकी के कारण पंकज उधास जी हमारे बीच हमेशा रहेंगे। उनकी तस्वीर हमारे आंखों के सामने गजल यह शब्द दोहराने पर हमेशा उमड आएगी। इस महान शख्सियत को पूरा संसार कभी भूल नहीं पाएगा, क्योंकि उनकी आवाज में गजल की वह संवेदना थी जिसे हम चाह कर भी नहीं भूल पाएंगे । इस कारण पंकज उधास जी हमेशा हमारे भीतर अपनी आवाज के कारण अमर रहेंगे। इस महान शख्सियत को मैं सलाम करती हूं मैं तहे दिल से उन्हें सलाम करती हूं।

संदर्भ-

१) एंटरटेनमेंट डेस्क बॉम्बे पब्लिश्ड बाय - भावना शर्मा।

२) एंटरटेनमेंट डेस्क बॉम्बे एडिटेड बाय- स्नेहा पतसिया।

३) न्यूज़ हिंदी समाचार फेब 26/2/2024

४) नवभारत टाइम्स, एन.डी. टी.वी. पब्लिश्ड बाय- राकेश रंजन कुमार।